E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

रत्नावली

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

रत्नावली नाटिका कवि श्रीहर्ष की सुप्रसिद्ध रचना है। सम्राट हर्ष बड़े ही उदार हृदय, विद्वान् एवं कवि थे। महाकवि बाण ने हर्षचरित नामक काव्य में हर्ष की काव्यप्रतिभा का वर्णन किया है। बाणभट्ट के अतिरिक्त मयूर तथा मातङ्ग दिवाकर आदि विद्वान् कवि भी इनकी राजसभा की शोभा बढ़ाते थे। राजशेखर का कथन है-

अहो प्रभावो वाग्देव्या यन्मातङ्गदिवाकरः।

श्रीहर्षस्याभवत्सभ्यः समो बाणमयूरयोः।।

यह चार अंकों की नाटिका है। इसमें राजा उदयन और सिंहल देश की राजकुमारी रत्नावली (सागरिका) के प्रणय और परिणय का वर्णन है। अंकानुसार इसकी कथा इस प्रकार है- (अंक १) राजा उदयन के महल में समुद्री दुर्घटना से बची हुई सिंहलराज की पुत्री रत्नावली वासवदत्ता के पास पहुँचती है और सागरिका नाम से उसकी दासी बनकर रहती है। उसके सौन्दर्य पर राजा आसक्त न हो जाए, अतः वह सागरिका को राजा से दूर रखती है, किन्तु मदनमहोत्सव में दोनों का साक्षात्कार हो जाता है तथा दोनों का पूर्वराग प्रारम्भ होता है। (अंक २) सागरिका अपनी सखी सुसंगता को उदयन-विषयक अपना प्रेम बताती है। एक मैना यह सब समाचार सुन लेती है। राजा का पालतू बन्दर उधर आता है और मैना का पिंजड़ा खोल देता है। मैना उड़ जाती है। राजा और विदूषक उस कदलीवन में आते हैं। मैना से उन्हें सारा समाचार ज्ञात होता है। सुसंगता के प्रयत्न से उदयनर सागरिका मिलते हैं। वासवदत्ता वहाँ आकर क्रुद्ध होती है तथा राजा के मनाने पर भी तमक कर चली जाती है। (अंक ३) सुसंगता और विदूषक ने उदय और सागरिका को माधवीलता-मण्डप में मिलाने का आयोजन किया। वासवदत्ता को षड्यन्त्र का पता चल गया और वह पहले ही वहाँ पहुँचती है। राजा उसे सागरिका नाम से संबोधित करता है। रानी क्रुद्ध होकर चली जाती है। सारी बातें जानकर सागरिका लज्जावश फाँसी

लगाने का प्रयत्न करती है, किन्तु राजा उसे बचा लेता है। दोनों प्रेमालाप प्रारम्भ करते हैं। इसी बीच पुनः वासवदत्ता आ जाती है और क्रुद्ध हो सागरिका को कैद में डाल देती है तथा उसे उज्जैन भेज देने की अफवाह उड़ा देती है। (अंक ४) एक जादूगर अपना खेल दिखाता है। महल में आग लगती है। वासवदत्ता सागरिका को बचाने के लिए राजा से प्रार्थना करती है। राजा उसे बचा लाता है। इसी समय सिंहल राजा के मंत्री और कंचुकी आते हैं और वे रत्नावली (सागरिका) को पहचान लेते हैं। वासवदत्ता को ज्ञात होता है कि वह उसके मामा की पुत्री है। वह दोनों का प्रेम विवाह कराती है।

हर्ष वैदर्भी रीति के कवि हैं। उनकी भाषा में प्रसाद और माधुर्य गुण पूर्णतया व्याप्त हैं। उनकी भाषा प्रौढ, परिष्कृत, भावाभिव्यक्ति में रस और प्रवाहपूर्ण है। कवि में प्रौढ कवित्व है और उच्चकोटि की कल्पना शक्ति। कुछ सर्वथा नवीन कल्पनाएं भी मिलती हैं। काव्य में संगीतात्मकता समन्वय है। रत्नावली शृङ्गाररस प्रधान नाटिका है। यथास्थान वीर, हास्य और करुण रसों का भी समावेश है। अलंकारों के लिए अलंकारों का प्रयोग नहीं है; श्रमसाध्य अलंकारों का प्रभाव है, तथापि स्वाभाविक रूप से उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अर्थान्तरन्यास आदि अलंकारों का प्रचुर प्रयोग मिलता है। कवि प्रकृति-वर्णन में अत्यन्त सिद्धहस्त है। वर्णनों में यथार्थता, स्वाभाविकता और चित्रात्मकता है। वृक्ष, वन, पर्वत, प्रासाद, उपवन, सूर्योदय, सूर्यास्त, मध्याह्न, ग्रीष्म आदि का अत्यन्त प्रभावपूर्ण सचित्र चित्रण है। कवि संगीत, काव्यशास्त्र, नाट्यशास्त्र, दर्शन, कामशास्त्र, नीतिशास्त्र, ज्योतिष, वैद्यक आदि का विशेषज्ञ है । विविध शास्त्रज्ञता के कारण उसके नाटकों में अपूर्व सहृदय-संवेद्यता है।

हर्ष ने अपनी नाटिका में कथानक-संयोजन, चरित्र-चित्रण एवं रसोद्भावन की दृष्टि से यथासाध्य उत्कृष्ट नाट्यकला का परिचय दिया है। रत्नावली में ऐन्द्रजालिक के समावेश के अतिप्राकृत तत्त्व के प्रति आस्था दिखाकर उन्होंने कविगत स्वच्छन्दता का परिचय दिया है। नाटिका-जैसी नाट्यविधा का प्रयोग पहले भी होता होगा किन्तु उपलब्ध नाटिकाओं में हर्ष की रचनाएँ ही प्रथम हैं। 'रत्नावली' तो नाट्यशास्त्रियों के बीच अत्यधिक लोकप्रिय रही है क्योंकि नाट्योपकरणों का एकत्र निवेश इसमें मिल जाता है। हर्ष ने इसी दृष्टि से इसकी रचना की थी, ऐसा तो नहीं कहा जा सकता किन्तु अनायास प्रयोग भी हर्ष के नाटय-कौशल का प्रतिफलन है।

संस्कृत कवियों में श्रीहर्ष को (नाटककारों में) कालिदास के बाद गिना जाता है। वैसे भाषा की प्रौढ़ता एवं प्रांजलता कालिदास, भवभूति, विशाखदत्तादि की अधिक पाण्डित्यपूर्ण है फिर भी जिस सरलता एवं अकृत्रिमता से नाटक तत्त्वों को श्रीहर्ष ने सफलतापूर्वक प्रदर्शित किया है वह कम प्रशंसनीय नहीं है।

कथावस्तु, घटना की गतिशीलता एवं अभिनेयता की दृष्टि से रत्नावली संस्कृत रूपकों में प्रमुख स्थान रखती है। इसका प्रधान रस शृङ्गार तथा कौशिकी वृत्ति है। नाटिका का नायक धीरललित वत्सराज उदयन है तथा नायिका मुग्धा नवानुरागवासवदत्ता (सागरिका) है। इसमें नाट्यशास्त्र के अङ्गों (सन्ध्यादि) का समावेश तथा नियमों का पालन बड़े चातुर्य से किया गया है। इसकी कथा 'बृहत्कथा' से ली गई है। नाटिका की भाषा प्राकृत एवं संस्कृत दोनों ही व्याकरण सम्मत, सरल, विरल समासयुक्त तथा प्रसाद गुण से युक्त है। यद्यपि इसमें विलासमय प्रणय का चित्रण है तथापि सर्वत्र भारतीय मर्यादा का समुचित निर्वाह किया गया है।

इस नाटिका नाट्यशास्त्र के नियमों का इसमें इतना सर्वाङ्गीण पालन हुआ है कि 'दशरूपक' और 'साहित्य दर्पण' में नाट्यतत्त्वों के विवेचन में इसके शताधिक उद्धरण दिये गए हैं। इस नाटिका का नायक राजा उदयन धारललित नायक है और नायिका रत्नावली को फलरूप में प्राप्त करता है। इसका सम्पूर्ण कथानक कुतूहल से ओतप्रोत है क्योंकि सारी घटनाएँ नाटकीय ढंग से घटित होती हैं। अभिनय की दृष्टि से भी यह एक सफल नाटिका है। इसमें 'वेष विपर्यय-दृश्य' अत्यन्त मार्मिक है। रत्नावली नाटिका में काव्य का चारुत्व दर्शनीय है। चरित्र-चित्रण भी बड़ा मनोहर एवं मनोवैज्ञानिक है। इसकी शैली सरस एवं प्रसादगुणसम्पन्न है जिसमें दूरुह शब्द एवं कठिन समास बन्ध का अभाव है। इसमें विलासयुक्त प्रणय का वर्णन है, किन्तु भारतीय संस्कृति की मर्यादा-दृष्टि का उल्लंघन नहीं हुआ है। रत्नावली नाटिका में काव्यत्व की चारुता दर्शनीय है।

'रत्नावली' नायिका प्रधान नाटिका है और उसमें प्रमुख रूप से रत्नावली के प्रेम भावना से ओत-प्रोत कोमल चरित्र की मार्मिक नाटकीय भावपूर्ण अभिव्यक्ति हुई है। रत्नावली में शृङ्गार रस प्रधान है। प्रारम्भ में ही वसन्तोत्सव के रूप में मदनोत्सव की योजना की गई है और इस सुन्दर वातावरण में वासवदत्ता एवं उदयन के प्रेम का अंकन हुआ है, जो सरस एवं मधुर है। इसके उपरान्त

सागरिका (रत्नावली) के साथ उदयन का प्रणय चलता है। यही इस नाटिका का प्रतिपाद्य है। रत्नावली में विप्रलम्भ शृङ्गार की मार्मिकता दर्शनीय है। उदयन की विरहजनित वेदना का वर्णन भी सुन्दर बन पड़ा है।

श्रीहर्ष की रत्नावली ही उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना कही जा सकती है। इसमें उनकी नाट्यकला का पूर्ण परिपाक मिलता है। इसमें नाटिका के समस्त शास्त्रीय नियमों का समुचित ढंग से पालन हुआ है।